SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रामकथा के सहायक पात्रों का अनुशीलन

प्रमोद कुमार यादव, शोभित कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
प्रमोद कुमार यादव
शोभित कुमार, शोधार्थी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/12/2023
Plagiarism : 00% on 20/12/2023

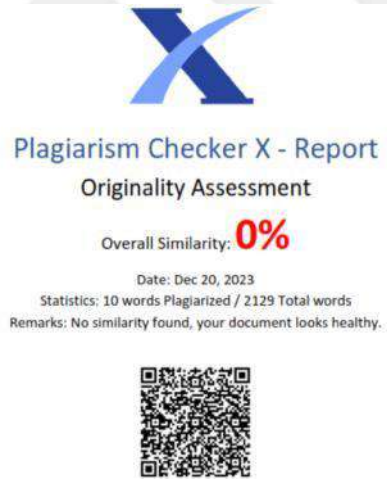

शोध सार

रामकथा के प्रमुख पात्रों की साहित्यिक चर्चा साहित्य एवं शोध ग्रंथों में सहज ही देखने को प्राप्त होती है परंतु वे पात्र जो साहित्यिक उपेक्षा के शिकार हैं, उनपर शोध चर्चा, साहित्य चर्चा भी होनी चाहिए। जो समाज को दिशा देने वाले पात्र हैं उनका उचित सम्मान भी होना चाहिए। रामकथा के वे पात्र जिनका साहित्य में स्वतंत्र वर्णन नहीं हुआ लेकिन सामाजिक दृष्टि एवं रामकथा को गति व विस्तार देने की दृष्टि से वे महत्त्वपूर्ण पात्र हैं, उनमें प्रमुख पात्रों का चारित्रिक अनुशीलन करना महत्त्वपूर्ण जान पड़ता है।

मुख्य शब्द

रामकथा, चारित्रिक अनुशीलन, वर्तमान बोध.

इस महत्त्वपूर्ण विषय पर सर्वप्रथम दृष्टि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की पड़ी। उन्होंने साहित्य के अचर्चित पात्रों पर लेखन करने पर बल दिया और इनकी मंशा के अनुरूप ही राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कैकेई अनुताप एवं उर्मिला विरह साकेत महाकाव्य में लिखा। महात्मा बुद्ध को सिद्धि मिल गई और उनके त्याग एवं तप की चर्चा सर्वत्र होने लगी। लेकिन एक पतिव्रता धर्मपत्नी यशोधरा और अबोध पुत्र राहुल के त्याग और संताप की चर्चा किसी साहित्यकार के लिए रुचिकर नहीं रही। रामकथा भी इस स्थिति से भिन्न नहीं है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के हस्तक्षेप से भले ही कुछ चर्चा प्राप्त हुई हो लेकिन नारी रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने वाले जटायु की स्वतंत्र साहित्यिक चर्चा दृष्टिगोचर नहीं होती है। इसी परिप्रेक्ष्य में रामकथा के अनुषांगिक पात्रों के चारित्रिक अनुशीलन का मेरा विनम्र प्रयास अग्रांकित है:

याज्ञवल्क्य एवं भरद्वाज: भारत ऋषियों और मुनियों की भूमि है। रामकथा में अनेक ऋषियों और

मुनियों का परिचय प्राप्त होता है। समाज के कल्याण हेतु मुनियों का मनन निरंतर चलता है। वे गुरू शिष्य संबंधों की नीति स्थापित करते हुए लिखते बताते हैं:

होइ न बिमल बिबेक उर, गुर सन किएँ दुराव।
गुरु से कपट करने हृदय में निर्मल ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता।

गुरु, शिक्षक, अध्यापक, ये ईश्वर की एकमात्र ऐसी कृति है जो सदा–सर्वदा अपने शिष्य/छात्रहित का ही चिंतन करते हैं। वे धिक्कार के योग्य शिष्य हैं जो गुरु से दुराव करें और वह गुरु भी प्रशंसा का पात्र नहीं जो शिष्य का अज्ञान दूर न कर सके। भारद्वाज और याज्ञवल्क्य के वार्तालाप से यही चारित्रिक विशेषता प्रकट होती है। भारद्वाज मुनि के संदर्भ में रामचरितमानस में उल्लिखित हुआ है:

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा, तिन्हहिं रामपद अति अनुरागा।
तापस सम दम दया निधाना, परमारथ पथ परम सुजाना।[1]

दया और परमार्थ की साधना कारण वाला व्यक्ति किस समाज में प्रशंसनीय और वंदनीय नहीं होगा।

राजा प्रतापभानु: राजा प्रतापभानु की कथा का विवरण राम चरित मानस में मिलता है। इस राजा के राज्य मे सम्पूर्ण प्रजा सुख पूर्वक रहती है राजा धर्मशील है। राज्य में धर्म अपने सभी अंगों सहित विराजमान है। साब सुखी एवं सम्पन्न हैं। राजा प्रतापभानु के प्रताप में भी कहीं कोई कमी नहीं है। जीवन की समस्त बिपदाएं राजा के पराक्रम से दूर हो चुकी है। निम्न पंक्तियों में स्पष्ट हो रहा है:

विश्व विदित एक कैकय देसू। सत्यकेतु तह वसन
धरम धुरंधर नीति निधाना। तेज प्रताप सील बलवाना।
तेहि के भए जुगल सुत बीरा। सब गुन धाम महा स्नधौरा।।
राज धनी जो जेठ सुत आही नाम प्रतापभानु अस नाही।।
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा भुजबल अतुल अचल संग्रामा।।
भाइहि भाइहि परम समीती सकल दोष छल बरजित प्रीती।।
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा। हरि हित आयु गवन बन कीन्हा।।
जब प्रतापरबि भयउ नृप फिरी दोहाई देस।
प्रजा पाल अति बेदविधि कतहुँ नहीं अघ लेस।।[2]

परन्तु प्रश्न यह उठता है, ऐसे प्रतापी और धर्मनिष्ठ राजा का सम्पूर्ण साम्राराज्य नष्ट कैसे हो जाता है। इस राजा के चारित्रक अनुशीलन से ज्ञात होता है कि राजा प्रतापभानु प्रकृति के नियम को अपने निमित्त बदलना चाहता है, प्रसंग दृष्टव्य है:

जरा मरन दुख रहित तनु, समर जितै जनि कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत होउ।।[3]

जिसने जन्म लिया वो जरा मरण से रहित नहीं हो सकता, लेकिन मनुष्य असीम वासनाएँ उसका विनाश करती हैं। प्रतापभानु इसी असीम वासना की आग में नष्ट हो गए। आज के समाज में इच्छाओं का मुख सुरसा की तरह फैलता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप मनुज का सुख और मानवता दोनों ही कालकवलित हो रहे हैं।

नारद: ''एक प्रसिद्ध मुनि, जो द्वापर, त्रेता और सतयुग में हुए थे। नारद एक तपस्वी, विद्वान् और बुद्धिमान मुनि थे। उनकी पहुँच मर्त्यलोक, स्वर्गलोक और पाताल आदि लोकों में थी। 'नारद भक्ति–सूत्र' इनकी प्रामाणिक पुस्तक है। किसी प्राणी पर संकट आने के समय ये उसकी सहायता के लिए तुरंत पहुँच जाते थे। विष्णु के अनन्य भक्तों में नारद का नाम आता है।''[4]

संस्कृत साहित्य में नारद चर्चित एक व्यक्तित्त्व हैं लेकिन रामकथा मे वे अनुषांगिक पात्र ही हैं। नारद ब्रह्मा के मानस पुत्र और हरि भक्त हैं। नारद द्वारा शाप देने के प्रसंग पर पार्वती जी चकित होकर पूछती हैं:

गिरिजा चकित भईं सुनि बानी।
नारद बिस्नुभगत पुनि जानी।।
कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा।
का अपराध रमापति कीन्हा।।[5]

इस प्रसंग में नारद का चरित्र विस्तार पाता है और शिवमुख से पार्वती जी नारद चरित्र का श्रवण करती हैं। शिवजी वर्णन करते हुए बताते हैं कि नारद के तप से देवताओं में भय उत्पन्न होता है और कामदेव तप भंग करने आते हैं लेकिन नारद काम पर विजय प्राप्त करते हैं। नारद काम पर तो विजय प्राप्त कर लेते हैं लेकिन हृदय में कामविजय का अहंकार अंकुरित हो जाता है जिस कारण वो विरक्त होने के उपरांत भी हरिमाया के चक्कर में भ्रमित होते हैं। इस संदर्भ में रामचरितमानस के अन्तर्गत कथा विस्तार पाती है और इस कथा में जो नारद कामविजयी थे वो स्वयंवर सभा में हरि से सुंदरता मांगने के बाद विवाह हेतु व्यग्र हैं। उदाहरण दृष्टव्य है:

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली।।
पुनि पुनि मुनि उकसहि अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसुकाहीं।।
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला। कुअरि हरषि मेलेउ जयमाला।।
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। नृपसमाज सब भयउ निरासा।।
मुनि अति बिकल मोहँ मति नाठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी।।[6]

काम, क्रोध, मद, लोभ आदि दुर्गुणों पर विजय का दंभ भरने वाले ये धर्म के ठेकेदार क्या नारद से भी अधिक संयमी हो सकते हैं? लेकिन आज का तथाकथित संन्यासी अपने नाश का ही सामान ढो रहा है और समाज को गर्त में ले जा रहा है।

ऋषि विश्वामित्र: विश्वामित्र रामकथा मे ऐसे ऋषि हैं जो राम और सीता को विवाहबंधन में बांधने के निमित्त प्रकट होते हैं। राजा दशरथ से विश्वामित्र राम को धर्म की रक्षा के लिए मांगते हुए कहते हैं:

असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउ नृप तोही।।
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध में होब सनाथा।।[7]

भारतीय परंपरा में ऋषि अपने लिए तो कुछ मांगते ही नहीं हैं, वे तो जनकल्याण के लिए ही जीवन धारण करते हैं।

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहूहि डरहीं।।
देखत जग्य निसाचर धावहिं करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं।।
गाधितनय मन चिंता व्यापी हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी।
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा।।
एहूँ मिस देखौं पद जाई करि बिनती आनों दोउ भाई।।
ग्यान बिराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मैं देखब भरि नयना।।[8]

इसके बाद राम के साथ मार्ग में जाते हुए विश्वामित्र समाज से तिरस्कृत अहिल्या का उद्धार करवाते हैं। यही परोपकार की भावना भारतीय धर्म दर्शन का प्राण है।

सुतीक्ष्ण: रामचरितमानस में अरण्यकाण्ड एक ऐसा काण्ड है जिसमें ऋषि एवं मुनियों का आशीर्वाद श्रीराम प्राप्त करते हैं। इस आशीर्वाद स्वरूप जो शिक्षा या उपदेश तुलसीदास जी ने दिए वे आज भी प्रासंगिक है। ''तुलसीदास जी ने दंडकारण्य में रहने वाले चार ऋषियों का उल्लेख किया है। साथ ही इनकी कथा की ओर संकेत किया है। इनमें अत्रि, शरभंग, सुतीक्ष्ण और अगस्त्य का नाम आता। सुतीक्ष्ण अगस्त्य ऋषि के शिष्य थे।''[9]

इस संदर्भ की की पुष्टि इन चौपाइयों में दृष्टव्य है:

मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति 'भगवाना।।

मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक।।
प्रभु आगवनु श्रवन सुनि पावा करत मनोरथ आतुर धावा।।
हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया।।
सहित अनुज मोहि राम गोसाई मिलिहहिं निज सेवक की नाई।।
मोरे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं। भगति बिरति न ग्यान मन माहीं।।
नहि सतसंग जोग जप जागा। नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा।।
एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की।।[10]

ईश्वर का भक्त जब प्रेम पथ का पथिक बनता है तब उसके लिए चराचर उपास्य हो जाते हैं और वह सबका उपासक।

अगस्त्यः रामकथा में अगस्त्य ऋषि जो कुंभज के नाम से भी जाने जाते हैं। रामकथा प्रवाह के एक प्रमुख ऋषि हैं। इनका परिचय रामचरितमानस संदर्भ समग्र में ललित शुक्ल द्वारा इस प्रकार दिया जाता हैः

''एक ऋषि, जिनका नाम 'अगस्त्य' भी है। यह ऋग्वेद की कई ऋचाओं के रचनाकार माने जाते हैं। उर्वशी की सुंदरता को देखकर मित्र और वरुण के रखलन से इनकी और वशिष्ठ की उत्पत्ति हुई थी। भाष्यकार सायण के अनुसार इनकी उत्पत्ति घड़े से हुई थी, इसीलिए इन्हें कुंभज, कुंभसंभव और घटोद्भव आदि की संज्ञा भी दी जाती है। माता–पिता को ध्यान में रखते हुए इन्हें 'मैत्रावरुणि' और 'और्वशीय' भी कहा जाता है।''[11]

राम अगस्त्य ऋषि से मिलकर आशीर्वाद लेते हैं और उनसे मंत्र पूछते हुए कहते हैं कि मुझे वह मंत्र दीजिए जिससे मैं मुनि द्रोही राक्षस समाज का विनाश कर सकूं।

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं।।
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ। ताते तात न कहि समुझायउँ।।
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही।
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी पूछेहु नाथ मोहि का जानी।।
तुम्हरेइँ भजन प्रभाव अघारी। जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी।।
ऊमरि तरु बिसाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया।।[12]

ऋषि अगस्त्य एक वैज्ञानिक ऋषि हैं। उनका अस्त्र–शस्त्रों पर शोध तत्कालीन समाज में प्रसिद्ध है।

वाल्मीकिः वाल्मीकि भविष्य के दृष्टा और समाज के पथप्रदर्शक ऋषि हैं। राम वनगमन प्रसंग में वाल्मीकि जी से मिलते हैं। वाल्मीकि जी का परिचय कुछ इस प्रकार हैः

''वाल्मीकि को 'कवीश्वर' और 'आदिकवि' के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने 'आदि काव्य रामायण' की रचना की है। कतिपय अति उत्साही लोगों की मान्यता है कि वाल्मीकि नीची जाति के थे। ऐसा एक विशेष उद्देश्य से कहा जाता है। 'अध्यात्म रामायण' और 'वाल्मीकि रामायण' में इन्हें प्रचेता का पुत्र कहा गया है। 'मनुस्मृति' के अनुसार प्रचेता वशिष्ठ, भृगु, नारद और पुलस्त्य आदि के भाई हैं। 'स्कंदपुराण' के अनुसार वाल्मीकि को अन्य जन्म में 'व्याघ' कहा गया है। इस जन्म से पूर्व ये 'स्तंभ' नाम के श्रीवत्स गोत्रीय ब्राह्मण थे। व्याध के रूप में शंख ऋषि के सत्संग से, राम नाम के जप से 'अग्निशर्मा' या 'रत्नाकर' नाम से जाने जाते थे। व्याधों के साथ रहने के कारण कुछ दिन व्याध–कर्म में लगे रहे। सप्तर्षियों के सत्संग से 'मरा–मरा' का जाप 'राम–राम' हो गया। घोर तपस्या के कारण दीमकों ने इनके ऊपर बाँबी बना दी। उसी बाँबी से निकलने के कारण इनका नाम 'वाल्मीकि' पड़ा। कृतिवास रामायण', 'आनंद रामायण', 'रामचरितमानस' और 'भविष्य पुराण' में वाल्मीकि की चर्चा कुछ भिन्न रूपों में आई है।''[13]

प्रखर चेतना संपन्न वाल्मीकि संपूर्णवन क्षेत्र का ज्ञान रहते हैं इसलिए राम उनसे अपने निवास के लिए उचित स्थान पूछते हैं। वाल्मीकि जी भी ज्ञान की दृष्टि से बड़ा सुंदर उत्तर देते हुए कहते हैंः

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा।।
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया।।
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी।।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी।।[14]

इसके उपरांत ऋषिवर राम को चित्रकूट में निवास का उचित बताते हैं। ऋषिकथन आज के संदर्भों में भी उतना ही उपयोगी है जितना उस समय रहा होगा। जिसके हृदय में काम, क्रोध, मद, मोह इत्यादि नहीं है और जो सबका हितकारी है, जो हमेशा से वचन कहता है, वह पुरुष आज भी श्रेष्ठता का मापदण्ड है।

लोमश: प्राचीन काल के एक ऋषि का नाम 'लोमश' है। इनके शरीर पर बालों की अधिकता से इनका नाम 'लोमश' पड़ा। कहा जाता है कि यह अपने पूर्वजन्म में शुद्ध थे। एक बार शिवलिंग की पूजा करने से इनकी मृत्यु हो गई थी और इन्होंने ब्राह्मण के घर में जन्म लिया। लोमश दीर्घजीवी थे, इसीलिए इनका एक नाम 'चिरंजीव' भी है। लोमश ऋषि का आश्रम राजस्थान में बूंदी के पास और हिमाचल प्रदेश में ज्वालामुखी के पास बताया जाता है। लोमश ऋषि के कतिपय ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं– ''लोमश संहिता', 'लोमश शिक्षा' तथा 'लोमश रामायण'।[15]

रामचरितमानस में लोमश ऋषि काकभुशुण्डि को ज्ञान और भक्ति का वरदान देते हैं। इतना ही नहीं क्रोध आने पर वे श्राप भी देते हैं। काकभुशुण्डि रामभक्ति की प्रत्याशा में भटकते हुए ऋषि लोमश के पहुँचते हैं और उनसे पूछते हुए कहते हैं:

मेरु सिखर बट छायाँ, मुनि लोमस आसीन।
देखि चरन सिरु नायउँ, बचन कहेउँ अति दीन।।
सुनि मम बचन बिनीत मृदु, मुनि कृपाल खगराज।
मोहि सादर पूँछत भए, द्विज आयहु केहि काज।।
तब मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्बग्य सुजान।
सगुन ब्रह्म अवराधन, मोहि कहहु भगवान।।[16]

निष्कर्ष

साहित्य के पात्र कहीं न कहीं समाज से जुड़े होते हैं और ये पात्र समाज की अभिव्यक्ति भी देते हैं। समाज को पात्र अभिव्यक्त करते हैं तो आने वाले समाज को प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। ऐसा नहीं है कि साहित्य की संवेदना से समाज की दूरी हो। यदि एक नहीं है तो कहीं न कहीं समाज या साहित्य में दोष है। प्रस्तुत शोधपत्र रामचरितमानस के पात्रों के वर्तमान में प्रासंगिक रहने का अध्ययन कर रहा है। निश्चय ही ये पात्र अपनी पौराणिकता को बनाए हुए आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सुची

1. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. 43 / 1
2. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. दोहा 153
3. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. दोहा 164
4. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* संदर्भ समग्र, ललित शुक्ल, पृष्ठ 109
5. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. बालकाण्ड दोहा 124 / 3–4
6. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. बालकाण्ड दोहा 135 / 1–3
7. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. बालकाण्ड दोहा 7 / 5

8. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दो. बालकाण्ड दोहा 206 / 2—4
9. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* संदर्भ समग्र 206
10. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अरण्यकाण्ड, दोहा 10 / 1—4
11. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* संदर्भ समग्र पृष्ठ 75
12. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अरण्यकाण्ड, दोहा 13ध्1—3
13. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* संदर्भ समग्र पृष्ठ 176
14. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अयोध्याकाण्ड, दोहा 130 / 1—2
15. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* संदर्भ समग्र पृष्ठ 176
16. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* उत्तरकाण्ड, दोहा 110 ख

****